अस़्स़लातुन्नूरानीयतु
वस़्स़लातुल्क़ादिरिय्यतु
व
दुरूदे चहेल मीम

38

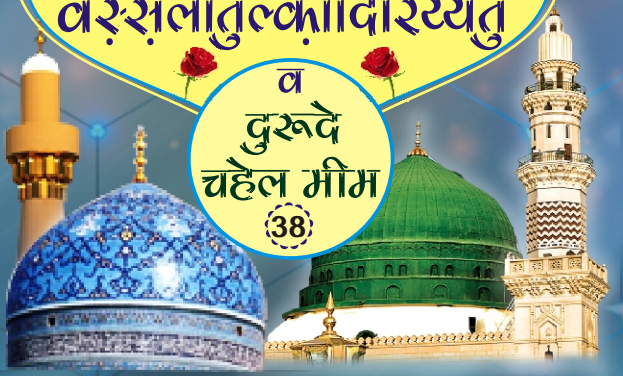

मुरत्तिब

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

786/92

अस्सलातुन्नूरानीयतु

वस्सलातुल्क़ादिरिय्यतु

व

दुरूदे चहेल मीम

38

मुरत्तिब

बमौक़ा रबीउस्सानी 1440 हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضي الله عنهم

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

दुरूदे चहेल मीम(38)

بِسۡمِ اللّٰهِ الۡمٰلِكِ السَّلٰمِ مَوۡلَائِیۡ هُوَ اللّٰهُ اِلٰهٌ

اَحَدٌ صَمَدٌ لَمۡ یَلِدۡ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ وَلَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ

کُفُوًا اَحَدٌ لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمۡ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰی سَیِّدِ

الۡمُرۡسَلِیۡنَ وَالۡحَاکِمِیۡنَ وَالۡمُخۡلِصِیۡنَ وَمُرَادِ

الۡعٰلَمِیۡنَ وَمُزَّمِّلٍ وَمُدَّثِّرٍ وَ اَحۡمَدَ وَحَامِدٍ

وَمَحۡمُوۡدٍ وَمُوۡصِلٍ وَشَفِیۡعِ الۡمُذۡنِبِیۡنَ

وَصَاحِبِ لِوَاءِ الۡحَمۡدِ وَهُوَ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ

وَعَلٰى وَالِدَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَالْاَنْبِيَاءِ
وَالشُّهَدَاءِ وَمُحْيِ الدِّيْنِ وَمُعِيْنِ الدِّيْنِ
وَاَحْمَدَوَلِيِّ اللّٰهِ وَحَوَارِيِّ وَلِيِّ اللّٰهِ وَكُلِّ اُمَمِهٖ
صَلَاةً تَغْفِرُبِهَا لِكُلِّ اُمَّةٍ حَبِيْبِكَ وَتُعْلِيْ بِهَا
مَرَاتِبَهُمْ وَتَحْفَظُهُمْ بِهَا مِنْ كُلِّ عَذَابٍ فِي
الدَّهْرِ وَالْقَبْرِ وَالْحَشْرِ ○

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो मालिक है सलामती देने वाला है मेरा मौला वह अल्लाह है जो यक्ता मअ़बूद है बेनियाज़ है वह किसी से पैदा नहीं, उस की कोई औलाद नहीं और कोई उसका हमसर नहीं अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। ऐ हमारे अल्लाह तू खूब खूब दाइमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा

तमाम रसूलों के सरदार पर, तमाम ह़ाकिमों और मुख़्लिसों के सरदार पर सारे जहान की मुराद पर, झुर्मुट मारने वाले पर, बाला पोश ओढ़ने वाले पर, बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ करने वाले पर, तअ़रीफ़ करने वाले पर, तअ़रीफ़ किए हुए पर, अल्लाह की बारगाह में पहुंचाने वाले पर, गुनहगारों की सिफ़ारिश करने वाले पर, और तअ़रीफ़ के झंड़ा वाले पर, और वह मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।(और ख़ूब दुरूदो सलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिदैन पर, आलो अस्ह़ाब पर, तमाम अम्बिया व शोहदा पर, शैख़ मोह़युद्दीन पर, ख़्वाजा मोईनुद्दीन पर और मख़दूम अह़मद वलीयुल्लाह पर, और आप के अस्ह़ाबे रूह़ानी पर, आप ﷺ की सारी उम्मत पर ऐसा दुरूद कि जिसकी बरकत से तू अपने ह़बीब की उम्मतों को बख़्श दे और उनके दरजात को बुलंद करदे और उन्हें दह्शो क़ब्रो ह़श्र में हर अ़ज़ाब से बचाले ।

फ़ज़ीलतः- जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना ४०/१०/७ बार पढ़ेगा अल्लाह उसे बख़्श देगा दुन्या व आख़िरत में उसे अल्लाह व रसूल की ख़ुशनूदी ह़ासिल होगी और उस को आक़ा ﷺ व अहले बैते किराम का दीदारे पाक नसीब होगा और उसकी हर दुआ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

फ़ज़ाएले दुरूदे नूरानी व दुरूदे क़ादिरी

अल्लाह की बे इन्तिहा ह़म्द और उस का शुक्र है और उस के ह़बीब ﷺ की बे ह़िसाब रह़मतो शफ़्क़त है कि पेशे नज़र "दुरूदे नूरानी व दुरूदे क़ादिरी" हुज़ूर ग़ौसुल्अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अन्हु के रूह़ानी फ़ैज़ान और सय्यिदुना मख़्दूम सय्यिदी व मुर्शिदी शैख़ अह़मद वलीयुल्लाह बग़दादी रदि़यल्लाहु अ़न्हु के रूह़ानी व क़ल्बी दसतगीरी से ह़ासि़ल हुई। जो कि मख़्फ़ी त़ौर से अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के सीनए पाक में मह़फ़ूज़ थी लिहाज़ा यह इस ज़माने के लिए नेअ़मते उ़ज़्मा है, दूरूदे नूरानी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लहु अ़न्हु के मादरी व पिदरी अन्साबे शरीफ़ा के ज़िक्र के साथ दुरूदो सलाम पर मुश्तमिल है और दुरूदे क़ादिरी में ह़ज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु के शजरए पेशवाई के ज़िक्र के साथ दुरूदो सलाम का गुलदस्ता पेश किया गया है, जो शख़्स

दुरूदे नूरानी व दुरूदे क़ादिरी को रोज़ाना १११ बार पढ़ेगा वह सिल्सिलए क़ादिरीया के जुम्ला मशाएख़ बिल्ख़ुसूस हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदियल्लाहु अ़न्हु और आप के जद्दे करीम ﷺ की रूहानी व क़ल्बी फ़ैज़ान से ऐसा माला माल होगा कि वह उस ज़माना के लिए ह़ैरत होगा इस पर सारे ह़िजाबात खोल दिए जाएंगे और वह अल्लाह का मख़्सूस बन्दा होगा और जो ४० बार या ११ बार या ३ बार रोज़ाना पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाहो रसूल की रिज़ा व ख़ुश्नूदी और अहले बैते किराम व स़ह़ाबए किराम व जुम्ला औलिया एज़ाम की ज़ियारतो शफ़्क़त ह़ासिल होगी उसे اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ का कमाले मर्तबए एह़सान और دِيْنَكُمْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ نِعْمَتِيْ का तमाम मर्तबए ईमान और الْاِسْلَامَ دِيْنًا की रिज़ाए मर्तबए इस्लाम ह़ासिल होगी, यह दुरूद उसे يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ के हुक्म का कामिल फ़ैज़ देगी, उसे فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ का कश्फ़े कामिल और فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ की ह़िद्दते बसारत ह़ासिल होगी, वह وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا के बह़रे

नापैदा किनार से फ़ैज़ाने इ़ल्म ह़ासिल करेगा, उसे وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ का इल्क़ाए ह़क़ ह़ासिल होगा, वह هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ की हिदायत से शादकाम होगा, उसे وَسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا की तौफ़ीक़ ह़ासिल होगी, वह سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ के नज़्ज़ारह, وَاَوْرَثْنَا الْاَرْضَ की विरासत, وَاَيَّدْنَاهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ की ताईद, رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً के तोह़फ़ए रिज़ा دَنٰى فَتَدَلّٰى की कुर्बत, اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً की ख़िलाफ़त और आ़लमे रूह़ानी में اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ के अ़ज़ीम हुल्लए नूरानी व ख़िलअ़ते रूह़ानी और ताजे सुल्त़ानी से नवाज़ा जाएगा, اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ के गिरोह में शामिल किया जाएगा, उसे مَفَاتِيْحُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ की कुन्जी अ़त़ा होगी उस का ज़ाहिरो बात़िन وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ पर अ़मल पैरा होगा, उस पर आ़लमे नासूत का ख़ैर खोल दिया जाएगा और वह आ़लमे मलकूतो जबरूत व लाहूत के फ़ैज़ाने करम से माला माल होगा उस की हर मुश्किलें ह़ल होंगी सारी ह़ाजात पूरी होंगी, दुश्मनों पर ग़ल्बा ह़ासिल होगा नफ़्सो शैत़ान के शरों से मह़फ़ूज़ रहेगा

अरवाहे अम्बिया व औलिया से मोलाक़ात का शर्फ़ हासिल होगा, वह अज़ाबे दह्रो क़ब्रो हश्र से महफ़ूज़ रहेगा, मुर्दा दिल को ज़िन्दगी हासिल होगी बीमार रूह को ताज़गी हासिल होगी, ना अहल अहल में से होजाएगा, बीमार शिफ़ा पाएगा, आसेब में मुब्तला शख़्स को नजात मिलेगी, अगर जादू या सहर का असर हो तो ख़त्म होजाएगा, वह हासिदों के हसद से, ज़ालिमों के जुल्म से, बदगोयूँ की बदगोई से, बद नज़्रों की बद नज़्री से, और हर हादेसा से महफ़ूज़ होगा, बे औलाद को नेक सालेह औलाद होगी, नाफ़रमान औलाद फ़रमाँबरदार होंगे ज़िक्रो फ़िक्र और इबादत में ज़ौक़ो शौक़ और लज़्ज़त हासिल होगी, बारे क़र्ज़ से नजात मिलेगी, निस्यान की आफ़त से अम्न में रहेगा, ग़ैबी इम्दाद हासिल होगी, अल्लाह उसे वहाँ से रिज़्क़ देगा जहाँ से उसे गुमान भी ना होगा, उस का दिल यादे इलाही से मुनव्वर होगा, उसे हर इम्तिहान और आज़्माइश में कामयाकबी अता होगी, वह कस्रत से तौबा करने वाला होगा, उस की हर दुआ क़बूल की जाएगी, गुम्राहो फ़ासिक़ो फ़ाजिर को हिदायत का नूर

मिलेगा, दरजात को बलंद किया जाएगा, वह हर लम्हा हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रद़ियल्लाहु अ़न्हु की नज़्रे रह़मतो शफ़्क़त और रूह़ानी व क़ल्बी रहबरी व दस्तगीरी में शराबोर रहेगा, उसे हर ज़माने के औलिया, सुल्ह़ा, अक़्त़ाब, अबदाल, औताद, अग़वास से मुलाक़ात ह़ासिल होगी, ख़ुलास़ा यह कि यह दूरूदे रूह़ानी व क़ल्बी मआ़दिनो मख़ाज़िन का मज्मूआ़ है जिस के बेशुमार फ़ज़ाएल और बे इन्तिहा फ़्यूज़ो बरकात हैं जिस से हर ज़माने में लोग मुस्तफ़ीज़ होंगे इस को मअ़मूल में रखने वाला बेशुमार नेअ़मतों से माला माल होगा जिस का वह ख़ुद मुशाहदा करेगा। इन्शा अल्लाहु तआ़ला।

बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में दुआ़ है कि हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म व ह़ज़राते मख़्दूमीन सादाते चौदहों पीराँ व बिल्ख़ुसूस़ सय्यिदिना मख़्दूम अह़मद वलीयुल्लाह के स़दक़े व तुफ़ैल हम सब को इस दुरूद को पढ़ने और इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

آمین یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی حَبِیْبِہٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَسَلَّمَ -

अस्सलातुन्नूरानीयतु मअ़ल्यानि अन्साबिश्शैख़ अ़ब्दिल्क़ादिरिल्जीलानीयि

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ بِسْمِ اللّٰهِ وَ الصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا هُوَ نُوْرُ اللّٰهِ ○ وَحَبِيْبُ
اللّٰهِ ○ وَنَبِيُّ اللّٰهِ ○ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○ يَا اِلٰهَ
الشَّيْخِ عَبْدِ الْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ ○ يَا رَبَّ

الشَّيْخِ عَبْدِالْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ صَلِّ وَسَلِّمْ
مَاتُصَلِّيْ وَمَلٰئِكَتُكَ وَجَمِيْعُ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَكُلٌّ
مِّنْ خَلْقِكَ يُصَلُّوْنَ وَ يُسَلِّمُوْنَ وَمَا مَرْقُوْمٌ
عَلَى اللَّوْحِ الْمَحْفُوْظِ وَمَا يُصَلِّيْ وَيُسَلِّمُ
الشَّيْخُ عَبْدُالْقَادِرِ الْجِيْلَانِيُّ بِاَمْرِكَ الْاَزَلِيِّ
كُنْ فَيَكُوْنُ بِقُدْرَتِكَ الْقَدِيْمَةِ كُلَّ اٰنٍ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا كَرَمِكَ○ وَنُوْرِكَ○
وَمَحَبَّتِكَ○ وَحَبِيْبِكَ ○ وَمَحْبُوْبِكَ ○ وَ

دَلِيْلِكَ الْحَقِّ ○ مُحَمَّدِ نِ الَّذِیْ قُلْتَ فِيْهِ فِی
الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ كَفٰی بِاللّٰهِ شَهِيْدًا مُّحَمَّدٌ
رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○ وَعَلٰی وَالِدَيْهِ ○ وَاٰلِهٖ ○ وَاَهْلِ
بَيْتِهٖ ○ وَاَصْحَابِهٖ ○ وَنُوْرِ الْمُصْطَفٰی سَيِّدَةِ
النِّسَاءِ فِی الْجَنَّةِ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ ○ وَفَيْضَانِ
الْمُصْطَفٰی سَيِّدِنَا الْمَوْلٰی عَلِيٍّ اَلْمُرْتَضٰی ○
وَاٰلِهٖ ○ وَنُوْرِ الْمُصْطَفٰی سَيِّدِ شَبَابِ اَهْلِ
الْجَنَّةِ سَيِّدِی الْاِمَامِ الْحَسَنِ ○ وَاٰلِهٖ ○
وَسَيِّدِی الْاِمَامِ الْحُسَيْنِ ○ وَاٰلِهٖ ○ وَجَمِيْعِ

الشُّهَدَاءِ كَرْبَلَاءَ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ
سَيِّدِیْ حَسَنٍ اَلْمُثَنّٰی○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحُسَيْنِ سَيِّدِی الْاِمَامِ زَيْنِ الْعَابِدِيْنَ○
وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَيِّدِیْ عَبْدِاللّٰهِ
اَلْمَحْضِ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحُسَيْنِ سَيِّدِی
الْاِمَامِ مُحَمَّدٍ اَلْبَاقِرِ○وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ
سَيِّدِیْ مُوْسٰی اَلْجَوْنِ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحُسَيْنِ سَيِّدِی الْاِمَامِ جَعْفَرٍ اَلصَّادِقِ○
وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَيِّدِیْ عَبْدِاللّٰهِ○

وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحُسَيْنِ سَيِّدِى الْاِمَامِ مُوْسٰى
اَلْكَاظِمِ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَيِّدِىْ
مُوْسٰى اَلثَّانِىْ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحُسَيْنِ
سَيِّدِى الْاِمَامِ عَلِيِّ رَضَا ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحَسَنِ سَيِّدِىْ دَاؤُدَ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحُسَيْنِ سَيِّدِىْ مُحَمَّدٍ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحَسَنِ سَيِّدِىْ مُحَمَّدٍ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحُسَيْنِ سَيِّدِىْ اَبِىْ عَلَاءِ الدِّيْنِ ○ وَنُوْرِ
الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَيِّدِىْ يَحْىٰ اَلزَّاهِدِ ○ وَنُوْرِ

الْاِمَامِ الْحُسَیْنِ سَیِّدِیْ عِیْسٰی○وَنُوْرِ

الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَیِّدِیْ عَبْدِاللّٰہِ الْجِیْلَانِیِّ○

وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحُسَیْنِ سَیِّدِیْ اَبِیْ کَمَالٍ○

وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحَسَنِ سَیِّدِیْ اَبِیْ صَالِحٍ مُوْسٰی

جَنْگِیْ دُوْسْتُ○وَنُوْرِ الْاِمَامِ الْحُسَیْنِ

سَیِّدِیْ عَبْدِاللّٰہِ○وَسَیِّدِیْ اَبِیْ عَطَّارٍ○

وَسَیِّدِیْ طَاهِرٍ○وَسَیِّدِیْ مَحْمُوْدٍ○

وَسَیِّدِیْ مُحَمَّدٍ○وَسَیِّدِیْ اَبِیْ جَمَالٍ○

وَسَیِّدِیْ عَبْدِاللّٰہِ الصَّوْمَعِیِّ الْحُسَیْنِیِّ○

وَسَيِّدَتِيْ اُمِّ الْخَيْرِ فَاطِمَةَ ○ وَنُوْرِ الْاِمَامِ
الْحَسَنِ ○ وَالْحُسَيْنِ ○ سَيِّدِيْ ○ وَمُرْشِدِيْ ○
وَرُوْحِيْ ○ وَقَلْبِيْ ○ مُحْيِ الدِّيْنِ ○ اَلْبَازِ
الْاَشْهَبِ ○ اَلشَّيْخِ عَبْدِالْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ ○
وَكُلِّ اٰلِهٖ ○ وَاَزْوَاجِهٖ ○ وَخُلَفَائِهٖ ○ وَ
مُرِيْدِيْهِ ○ صَلٰوةً تَغْفِرُلَنَا بِهَا وَلِوَالِدَيْنَا وَ
لِمَنْ تَوَالَدَ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ
الْاَمْوَاتِ اَجْمَعِيْنَ ○ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

الرَّاحِمِيْنَ○ وَتَقْضِیْ بِهَا كُلَّ حَاجَاتِنَا○
وَتَجْعَلُنَا بِهَا مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ الَّذِيْنَ
لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ○ اَللّٰهُمَّ
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ○ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ○ آمين○

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़, और खूब सलामती नाज़िल हो हमारे सरदार अल्लाह के नूर अल्लाह के ह़बीब और अल्लाह के नबी मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के मअ़बूद, ऐ शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के पालनहार जो दुरूद तू

भेजता है और जो दूरूदो सलाम तेरे फ़िरिश्ते तमाम मोमिन मर्दो औ़रत और तमाम मुसल्मान मर्दो औ़रत भेजते हैं और तेरी तमाम मख़्लूक़ जो दुरूदो सलाम भेजती है और वह दुरूदो सलाम जो लौहे़ महफ़ूज़ में लिखा हुवा है और वह दुरूदो सलाम जो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी भेजते रहे हैं वही दुरूदो सलाम तू अपने अज़्ली अम्र कुन फ़ य कून के साथ अपनी कुदरते क़दीमा से हर लम्हा अपनी तमाम मअ़लूम तअ़दाद के मुताबिक़ खूब खूब नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार हमारे मौला हमारे आक़ा अपने करम पर अपने नूर पर अपनी मोहब्बत पर अपने महबूब और अपनी हक़ की दलील मोहम्मद ﷺ पर कि जिन के बारे में तू ने कुर्आने मजीद में फ़रमाया और अल्लाह ग्वाही के लिए काफ़ी है कि मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं और (खूब दुरूदो सलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिदैन पर आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के

सह़ाबा पर और नूरे मुस्त़फ़ा जन्नती औ़रतों की सरदारन फ़ातिमा ज़हरा पर और फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा सय्यिदी मौला अ़ली मुर्तज़ा पर और आप की आल पर और नूरे मुस्त़फ़ा जन्नती नौजवानों के सरदार सय्यिदी इमाम ह़सन पर और आप की आल पर और सय्यिदी इमाम हुसैन और आप की आल पर और तमाम शुहदाए करबला पर नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी ह़सन मुसन्ना पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी इमामे ज़ैनुल आ़बेदीन पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी अ़ब्दुल्लाह मह़ज़ पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी इमामे मोह़म्मद बाक़िर पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी मूसा जौन पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी इमामे जअ़फ़र स़ादिक़ पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी अ़ब्दुल्लाह पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी इमाम मूसा काज़िम पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी मूसा सानी पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी इमाम अ़ली रज़ा पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी दाऊद पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी मोह़म्मद

पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी मोह़म्मद पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी अबू अ़लाउद्दीन पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी यह़या ज़ाहिद पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी ईसा पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी अ़ब्दुल्लाह जीलानी पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी अबू कमाल पर, नूरे इमामे ह़सन सय्यिदी अबू स़ालेह़ मूसा जंगी दोस्त पर, नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी अ़ब्दुल्लाह पर, सय्यिदी अबू अ़त्तार पर, सय्यिदी त़ाहिर पर, सय्यिदी मह़मूद पर, सय्यिदी अबू जमाल पर, सय्यिदी अ़ब्दुल्लाह सौमई़ हुसैनी पर, सय्यिदह उम्मुल्ख़ैर फ़ात़िमा पर, नूरे इमामे ह़सन व नूरे इमामे हुसैन सय्यिदी व मुर्शिदी व रूह़ी व क़ल्बी मुह़युद्दीन बाज़े अशहब शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी पर, आप की तमाम आलो औलाद पर आप की तमाम अज़्वाज पर और आप के तमाम ख़ुल्फ़ा और मुरीदों पर, ऐसा दुरूद कि जिस की बरकत से तू हमें बख़्श दे हमारे वालिदैन को बख़्श दे और हमारी औलाद को बख़्श दे

और तमाम मोमिन मर्दो औ़रत, तमाम मुसल्मान मर्दो औ़रत को बख़्श दे, उन में से जो ज़िन्दा हैं या वफ़ात पाचुके हैं उन्हें भी बख़्श दे ऐ तमाम रह़म करने वालों में सब से ज़्यादा मेहरबान तेरी रह़मत का वास्ता है, ऐसा दुरूद कि जिस की बरकत से तू हमारी तमाम ह़ाजतें पूरी फ़रमा दे और हमें अपने उन नेक बन्दों में से बनादे जिन्हें ना कोई ख़ौफ़ है ना कोई ग़म ऐ हमारे अल्लाह तू हमें सीधा रास्ता चला, उन का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया उनका रास्ता नहीं जिन पर ग़ज़ब हुवा ना बहके हुवों का। ऐ अल्लाह क़ुबूल फ़रमा।

नोट:- आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्तन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्सारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम"वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

अस्सलातुल्क़ादिरिय्यतु

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا هُوَ نُوْرُ اللّٰهِ ○ وَحَبِيْبُ

اللّٰهِ ○ وَنَبِيُّ اللّٰهِ ○ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○ يَا اِلٰهَ

الشَّيْخِ عَبْدِ الْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ ○ يَا رَبَّ

الشَّيْخِ عَبْدِ الْقَادِرِ الْجِيْلَانِيِّ صَلِّ وَسَلِّمْ

عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا كَرَمِكَ ○ وَنُوْرِكَ ○

وَمَحَبَّتِكَ ○ وَحَبِيْبِكَ ○ وَمَحْبُوْبِكَ ○
وَدَائِمِ رَحْمَتِكَ ○وَالْبَدْرِ الْكَامِلِ مَنْ لَّهُ
الشَّامَةُ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ فِيْ طُوْلِ الزَّمَانِ ○
وَعَلَامَةُ نَبِيِّنَا وَمَوْلٰنَا مُظَلَّلٌ بِالرَّحْمَةِ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ○ وَهُوَ نُوْرُ نُوْرِكَ ○ وَسِرُّ سِرِّكَ ○
وَ كَرَمُ كَرَمِكَ ○ وَرَحْمَةُ رَحْمَتِكَ ○وَفَيْضُ
فَيْضِكَ ○ وَرِضَاءُ رِضَائِكَ ○ وَحُكْمُ
حُكْمِكَ ○ وَرَؤُفٌ بِعِبَادِكَ ○ وَمُفَيِّضٌ
بِمُحِبِّكَ ○ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ ○ وَعَلٰى

وَالِدَيْهِ ○ وَاٰلِهٖ ○ وَاَصْحَابِهٖ ○ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ ○

وَالسَّيِّدَةِ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ ○ وَفَيَضَانِ

الْمُصْطَفٰى سَيِّدِى الْمَوْلٰى عَلِيِّ الْمُرْتَضٰى ○

وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِى الْاِمَامِ

الْحُسَيْنِ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِى

الْاِمَامِ زَيْنِ الْعَابِدِيْنَ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى

سَيِّدِى الْاِمَامِ مُحَمَّدٍ اَلْبَاقِرِ ○ وَفَيَضَانِ

الْمُصْطَفٰى سَيِّدِى الْاِمَامِ جَعْفَرٍ اَلصَّادِقِ ○

وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِى الْاِمَامِ مُوْسٰى

اَلْكَاظِمِ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ اَبِى
الْحَسَنِ عَلِيٍّ ○ وَ فَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ
مَعْرُوْفِ اَلْكَرْخِيِّ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى
سَيِّدِىْ سِرِّيٍّ السَّقَطِيِّ○ وَفَيَضَانِ
الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ اَبِى الْقَاسِمِ جُنَيْدٍ
اَلْبَغْدَادِيِّ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ
اَبِىْ بَكْرٍ اَلشَّيْخِ اَلشِّبْلِىْ○ وَفَيَضَانِ
الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ اَبِى الْفَضْلِ عَبْدِالْوَاحِدِ
اَلتَّمِيْمِيِّ ○وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِىْ اَبِى

اَلْفَرَحِ اَلطَّرْطُوْسِيِّ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى

سَيِّدِيْ اَبِي الْحَسَنِ عَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ اَلْقَرْشِيِّ

اَلْهَنْكَارِيِّ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى سَيِّدِيْ اَبِيْ

سَعِيْدٍ اَلْمَخْزُوْمِيِّ ○ وَفَيَضَانِ الْمُصْطَفٰى ○

وَنُوْرِ الْمُصْطَفٰى ○ وَقَدَمِ الْمُصْطَفٰى ○

وَحُكْمِ الْمُصْطَفٰى ○ وَشَرِيْعَةِ الْمُصْطَفٰى ○

وَطَرِيْقَةِ الْمُصْطَفٰى ○ وَمَعْرِفَةِ الْمُصْطَفٰى ○

وَحَقِيْقَةِ الْمُصْطَفٰى ○ وَسِرِّ الْمُصْطَفٰى ○

وَكَرَمِ الْمُصْطَفٰى ○ وَ نِعْمَةِ الْمُصْطَفٰى ○

وَاِنْعَامِ الْمُصْطَفٰے ○ وَالْحَسَنِيِّ ○ وَالْحُسَيْنِيِّ ○
وَ شَيْخِ الشُّيُوْخِ ○ وَ شَيْخِ الْكُلِّ ○ وَمَالِكِ
اَزِمَّةِ الْمُتَصَرِّفِيْنَ ○ وَ رَئِيْسِ الْمَحْبُوْبِيْنَ ○
وَالدُّرَّةِ الْبَيْضَاءِ ○ وَ الْبَازِ الْاَشْهَبِ ○
سَيِّدِنَا مُحْيِ الدِّيْنِ ○ سُلْطَانِ الْاَوْلِيَاءِ ○
سَيِّدِیْ ○ وَسَنَدِیْ ○ وَرُوْحِیْ ○ وَقَلْبِیْ ○
وَشَيْخِیْ ○ وَمُرْشِدِیْ ○ وَالشَّيْخِ عَبْدِالْقَادِرِ
الْجِيْلَانِيِّ ○ وَكُلِّ اٰلِهٖ ○ وَ خُلَفَائِهٖ ○
وَمُرِيْدِيْهِ ○ وَجَمِيْعِ مُتَوَسِّلِيْهِ ○ صَلٰوةً

تُفِيْضُ بِهَا بِاَرْوَاحِ جَمِيْعِ مَشَائِخِ السِّلْسِلَةِ
الْقَادِرِيَّةِ اَرْوَاحَنَا وَقُلُوْبِهِمْ قُلُوْبَنَا وَ
اَجْسَامِهِمْ اَجْسَامَنَا وَظَوَاهِرِهِمْ ظَوَاهِرَنَا
وَبَوَاطِنِهِمْ بَوَاطِنَنَا وَاَقْوَالِهِمْ اَقْوَالَنَا
وَاَفْعَالِهِمْ اَفْعَالَنَا○ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ
النَّارِ○ اَللّٰهُمَّ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ○
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ○ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ○ آمين○

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़, और ख़ूब सलामती नाज़िल हो हमारे सरदार अल्लाह के नूर अल्लाह के ह़बीब और अल्लाह के नबी मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं, ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के मअ़बूद, ऐ शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के पालनहार तू ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार अपने करम पर, अपने नूर पर, अपनी मोह़ब्बत पर, अपने ह़बीब अपने मह़बूब पर, अपनी दाइमी रह़मत पर, और बदरे कामिल पर, क़यामत तक ज़माने की दराज़ी में कि जिन की बुलंद शान है हमारे नबी और हमारे मौला की पहचान यह है कि वह सारे आ़लम पर रह़मत के साथ साया फ़गन हैं और वह तेरे नूर के नूर हैं, तेरे राज़ के राज़ हैं तेरी रह़मत की रह़मत हैं, तेरे फ़ैज़ का फ़ैज़ हैं, तेरी ख़ुश्नूदी की ख़ुश्नूदी हैं, तेरे हुक्म का हुक्म हैं, और तेरे बन्दों पर नेहायत मेहरबान हैं, और तुझ से मोह़ब्बत करने वालों को फ़ैज़ बख़्शने वाले मोह़म्मद ﷺ अल्लाह

के रसूल हैं और (ख़ूब दुरूदो सलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आलो औलाद पर, आप ﷺ के अस्हाब पर, और आप ﷺ की अहले बैत पर, सय्यिदह फ़ातिमा ज़हरा पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी मौला अ़ली पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी इमामे हुसैन पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी इमाम ज़ैनुल्आबेदीन पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी इमाम मोह़म्मद बाक़िर पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी इमाम जअ़फ़र स़ादिक़ पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी इमाम मूसा काज़िम पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी अबुल ह़सन अ़ली पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी मअ़रूफ़ करख़ी पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी सिर्री सक़्ती पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी शैख़ अबू बकर शिब्ली पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी अबुल फ़ज़्ल अ़ब्दुल वाह़िद तमीमी पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी अबुल्फ़रह़ त़रतूसी पर, फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा सय्यिदी अबुल ह़सन अ़ली बिन

मोह़म्मद क़रशी हन्कारी पर, फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा सय्यिदी अबू सईद मख़्ज़ूमी पर, फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा, नूरे मुस्त़फ़ा, क़दमे मुस्त़फ़ा, हुक्मे मुस्त़फ़ा, शरीअ़ते मुस्त़फ़ा, त़रीक़ते मुस्त़फ़ा ह़क़ीक़ते मुस्त़फ़ा, सिर्रे मुस्त़फ़ा, करमे मुस्त़फ़ा, नेअ़मते मुस्त़फ़ा, इन्आ़मे मुस्त़फ़ा, ह़सनी हुसैनी तमाम शैख़ों के शैख़ सब के पीर तस़र्रूफ़ करने वालों के लगाम के मालिक तमाम मह़बूबों के सरदार रौशन मोती, बाज़े अशहब सय्यिदी मुह़युद्दीन तमाम वलियों के बादशाह मेरे आक़ा मेरी सनद मेरी रूह़ मेरा क़ल्ब मेरे पीर मेरे रहनुमा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी पर, और आप की तमाम आलो औलाद पर, और आप के माम ख़ुल्फ़ा व मुरीदों पर, और आप से तवस्सुल रखने वालों पर, ऐसा दुरूद कि जिस की बरकत से तू सिल्सिलए क़ादिरीया के तमाम मशाएख़ की अरवाह़ से हमारी रूहों को फ़ैज़याब फ़रमा और उन के क़ुलूब से हमारे दिलों को फ़ैज़याब फ़रमा, और उनके जिस्मों से हमारे जिस्मों को फ़ैज़याब

फ़रमा, उन के ज़ाहिर से हमारे ज़ाहिर को फ़ैज़याब फ़रमा, उनके बातिन से हमारे बातिन को फ़ैज़याब फ़रमा, उनके अक़्वाल से हमारे अक़्वाल को फ़ैज़याब फ़रमा, और उनके अफ़्आल से हमारे अफ़्आल को फ़ैज़याब फ़रमा, ऐ हमारे पालन हार तू हमें दुन्या में भलाई दे और और आख़िरत में भलाई दे और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले, ऐ हमारे अल्लाह तू हमें सीधा रास्ता चला, उन का रास्ता जिन पर तू ने इन्आ़म फ़रमाया उनका रास्ता नहीं जिन पर ग़ज़ब हुवा ना बहके हुवों का। ऐ अल्लाह क़ुबूल फ़रमा।

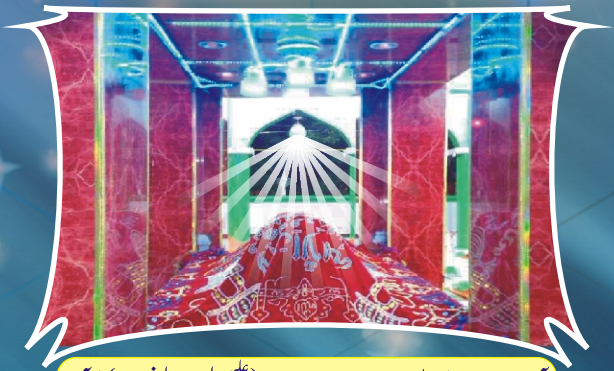

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com